Patrika (Indore), 26th November 2026, Page – 01

आइआइटी इंदौर | अमेरिकन जियोफिजिकल यूनियन के नेचुरल हैजर्ड्स सेक्शन अध्यक्ष चुनी गई प्रो. नीलिमा

पहाड़ों की धड़कन पढ़ आपदा से पहले खतरे का अलर्ट देंगी नीलिमा

पत्रिका न्यूज़ नेटवर्क
patrika.com

इंदौर. पहाड़ों की ढलानों में होने वाले बदलाव, मिट्टी की हलचल और बारिश के असर को समय रहते पहचान लिया जाए तो भूस्खलन से होने वाली बड़ी जनहानि को रोका जा सकता है। आइआइटी इंदौर की प्रो. नीलिमा सत्यम लंबे समय से शोध कर रही हैं। उनके शोध और प्राकृतिक आपदाओं के जोखिम को कम करने के अनुभव को अंतरराष्ट्रीय स्तर पर नई जिम्मेदारी मिली है। अमेरिकन जियोफिजिकल यूनियन (एजीयू) के नेचुरल हैजर्ड्स सेक्शन का अध्यक्ष चुना गया है। इस पद पर पहुंचने वाली वे भारत की पहली महिला विज्ञानी हैं। नई जिम्मेदारी के साथ अब वे दुनिया के विभिन्न देशों के वैज्ञानिकों के साथ प्राकृतिक आपदाओं की चुनौतियों और उनसे बचाव के प्रभावी तरीकों पर काम करेंगी। प्रो. सत्यम का शोध भूस्खलन जैसी घटनाओं के पीछे काम करने वाले प्राकृतिक और भू-तकनीकी कारणों को समझने पर केंद्रित रहा है। इन बदलावों की समय रहते पहचान के लिए सेंसर आधारित निगरानी और वैज्ञानिक आकलन जरूरी है। इसी तकनीक के माध्यम से संभावित खतरे वाले क्षेत्रों की पहचान कर स्थानीय स्तर पर चेतावनी प्रणाली विकसित की जा सकती है, ताकि लोगों को समय रहते सुरक्षित स्थानों पर पहुंचाया जा सके।



वायनाड तक ढलानों की स्थिरता का अध्ययन

प्रो. नीलिमा ने भूस्खलन के लिहाज से संवेदनशील कई क्षेत्रों में शोध किया है। इनमें दार्जिलिंग हिमालय के कालिम्पोंग से लेकर उत्तराखंड और केरल के वायनाड तथा इडुक्की तक के क्षेत्र शामिल हैं। पहाड़ी ढलानों की प्रकृति, उनकी स्थिरता और भूस्खलन की आशंकाओं को समझने का प्रयास किया।

एशिया पर फोकस

अमरीकन जियोफिजिकल यूनियन के नेचुरल हैजर्ड्स सेक्शन की अध्यक्ष के रूप में प्रो. सत्यम विभिन्न देशों के वैज्ञानिकों के साथ प्राकृतिक आपदाओं से जुड़े शोध पर काम करेंगी। विशेष जोर एशिया पर रहेगा, जहां दुनिया की करीब 60 प्रतिशत प्राकृतिक आपदाएं होती हैं। उनका मानना है कि विकसित प्रभावी तकनीकों और तरीकों को दूसरे देशों की भौगोलिक परिस्थितियों के अनुसार अपनाया जाना चाहिए।